पुनर्जन्म माँ का होता है...

संजीव जैन
प्रिंसिपल जज, फॅमिली कोर्ट (HQ) द्वारका कोर्ट
नई दिल्ली

एक जन्म देती है माँ जब, पुनर्जन्म माँ का होता है।
कभी लौटता फिर से बचपन, कभी बड़ी हो जाती है माँ।
मित्र, गुरू, और प्रहरी बन कर, कितने रूप निभाती है माँ।
भूख, नींद, रूप और यौवन, हंस-हंस स्वयं लुटाती है माँ।
गाते-गाते कभी लोरियाँ, सपनों में खो जाती है माँ।
गीला बिस्तर और रतजगा, तब जाकर बच्चा सोता है।
एक जन्म देती है माँ जब, पुनर्जन्म माँ का होता है।

बच्चे से बतियाती है जब, माँ खुद भी तुतलाने लगती।
फूले नहीं समाती खुद में, और कभी झुंझलाने लगती।
अपने काजल से बच्चे को,टीका कभी लगाने लगाती।
और कभी अपनी नज़रों से, शिशु को स्वयं बचाने लगती।
अमृत धार छलकने लगती, जब-जब कोई शिशु रोता है।
एक जन्म देती है माँ जब,पुनर्जन्म माँ का होता है।

दर्द, बीमारी, थकन स्वयं की, शिशु को कभी जताती कब माँ।
अपनी ख़ुशियाँ, अपनी मुश्किल, मन की बात बताती कब माँ।
कभी चैन से बैठ कहीं पर, एक पल कभी बिताती कब माँ।
जीवन की आपाधापी में, शिशु से नज़र हटाती कब माँ।
खोज डालती धरा गगन सब, शिशु ज़रा ओझल होता है।
एक जन्म देती है माँ जब, पुनर्जन्म माँ का होता है।

क़ुदरत का विधान, नया जन्म दोनों लेते है।
अद्भुत है सम्मान, नया जन्म दोनों लेते है।
सृजन और परिवर्तन मिल कर, चढ़ते है परवान।
जीवन है वरदान, नया जन्म दोनों लेते है।
एक माँ का अवतार उतरता, एक अस्तित्व कहीं खोता है।
एक जन्म देती है माँ जब, पुनर्जन्म माँ का होता है।